गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 166
दि. 15.10.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

सशस्त्र माओवादी संगठन को बड़ा झटका, वरिष्ठ नेता सोनू दादा ने 60 साथियों के साथ किया आत्मसमर्पण

(जीएनएस)। नई दिल्ली। माओवादी संगठन के लिए एक ऐतिहासिक झटका तब आया जब सीपीआई (माओवादी) के वरिष्ठ नेता और पोलित ब्यूरो एवं सेंट्रल मिलिट्री कमीशन के सदस्य मल्लोजुला वेणुगोपाल राव उर्फ सोनू ने मंगलवार (14 अक्टूबर) को महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले में 60 अन्य माओवादी साथियों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। 70 वर्षीय वेणुगोपाल के इस कदम ने संगठन की वैचारिक ताकत, संचार तंत्र और बाहरी दुनिया से संपर्क को गंभीर क्षति पहुंचाई है।

सोनू का सशस्त्र संगठन में 1980 के दशक से लंबा अनुभव रहा है। वे तेलंगाना के पेद्दापल्ली जिले के रहने वाले हैं और बी.कॉम की पढ़ाई पूरी करने के बाद पीपुल्स वॉर ग्रुप में शामिल हुए थे। 2010 में पार्टी प्रवक्ता चेरकूरी राजकुमार (आज़ाद) की मौत के बाद वेणुगोपाल पार्टी प्रवक्ता बने और तब से 'अभय' के नाम से प्रेस बयान जारी कर रहे थे। वे माओवादी समर्थक संगठनों और बाहरी दुनिया के बीच संपर्क बनाए रखने वाले मुख्य कड़ी थे।

वेणुगोपाल माओवादी नेता किशनजी के छोटे भाई भी हैं, जिनकी 2011 में लालगढ़, पश्चिम बंगाल में मुठभेड़ में मौत हो गई थी। उनके नेतृत्व में संगठन ने छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और ओडिशा में सक्रिय रहकर कई सशस्त्र अभियान चलाए। इस दौरान उनके ऊपर 1.5 करोड़ रुपये का इनाम भी रखा गया था। अन्य वरिष्ठ नेताओं डीवीसीएम और डीकेएसजेडसी पर क्रमशः 8

लाख और 25 लाख रुपये का इनाम था। पार्टी के भीतर हथियार छोड़ने और संघर्ष जारी रखने को लेकर लंबे समय से मतभेद थे। हाल ही में वेणुगोपाल ने एक पत्र जारी कर कहा था कि 'पार्टी को बचाने के लिए अब सशस्त्र संघर्ष समाप्त करने का समय आ गया है' और स्पष्ट रूप से लिखा कि माओवादियों द्वारा हथियार छोड़ने का निर्णय लिया गया है। यह देश में चल रहे 60 वर्षों के नक्सल अभियान का पहला ऐसा पत्र था। हालांकि, तेलंगाना राज्य कमेटी ने 19 सितंबर को यह स्पष्ट किया कि यह केवल वेणुगोपाल की निजी राय है और पार्टी का आधिकारिक निर्णय नहीं है। सोनू दादा के आत्मसमर्पण से माओवादी संगठन की रणनीतिक क्षमता पर असर पड़ा है। इस साल 5 अप्रैल को भी 86 माओवादी कार्यकर्ताओं, जिनमें 20 महिलाएं और कई एरिया कमेटी सदस्य शामिल थे, ने भद्राद्री-कोठागुडेम पुलिस के सामने हथियार डाले थे। इसके अलावा पिछले सप्ताह तीन वरिष्ठ माओवादी नेताओं ने तेलंगाना के नए पुलिस महानिदेशक बी. शिवधर रेड्डी के सामने हथियार सौंपे। विश्लेषकों के अनुसार, वेणुगोपाल का आत्मसमर्पण माओवादी संगठन की सशस्त्र गतिविधियों को कमजोर करने के साथ-साथ सरकार और सुरक्षा बलों के प्रयासों की सफलता का प्रतीक है। यह कदम यह भी संकेत देता है कि लगातार बढ़ रहे आत्मसमर्पण और संगठन के आंतरिक मतभेदों ने माओवादी समूह की एकजुटता को कमजोर कर दिया है।

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में 12 घंटे चली मुठभेड़ में 2 आतंकवादी ढेर, एलओसी पर घुसपैठ नाकाम

(जीएनएस)। कुपवाड़ा। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में मंगलवार सुबह सुरक्षाबलों ने दो आतंकवादियों को मार गिराया, जो एलओसी के पास घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे। यह मुठभेड़ कुंबकडी जंगलों में 13 अक्टूबर की शाम 7 बजे से शुरू हुई थी और करीब 12 घंटे तक जारी रही। सेना और सुरक्षा बलों ने आतंकियों की घुसपैठ की योजना को नाकाम कर दिया।

इस ऑपरेशन को सेना ने 'ऑपरेशन गुड्डू' का नाम दिया है। इस क्षेत्र में पहले भी आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ हो चुकी है। 8 सितंबर को कुलगाम में हुई मुठभेड़ में सेना ने दो आतंकियों को ढेर किया था, जिसमें दो जवान शहीद भी हुए थे। इस दौरान मारे गए आतंकियों में शोपियां के निवासी आमिर अहमद डार शामिल थे, जो लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा था और सितंबर 2023 से सक्रिय था। वह पहलगाम हमले के बाद जारी 14 आतंकियों की सूची में भी शामिल था।

सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि कुपवाड़ा और आसपास के इलाके इस समय विशेष रूप से संवेदनशील हैं। घाटी में सर्दियों के मौसम में आतंकी घुसपैठ के लिए मुफीद परिस्थितियों का लाभ उठाने की कोशिश करते हैं। इस वर्ष 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' चलाया था। सेना वर्तमान में एलओसी और पर्वतीय दर्रों पर कड़ी निगरानी रखे हुए है ताकि किसी भी आतंकवादी गतिविधि को पहले ही नाकाम किया जा सके। सुरक्षा बलों ने कुपवाड़ा ऑपरेशन में सघन तलाशी अभियान और खुफिया नेटवर्क का उपयोग किया। मुठभेड़ के दौरान इलाके में कोई नागरिक हताहत नहीं हुआ। सेना ने कहा कि ऑपरेशन के दौरान आतंकियों के पास से हथियार और गोला-बारूद भी बरामद किया गया। यह मुठभेड़ इस बात का सबूत है कि जम्मू-कश्मीर में एलओसी और संवेदनशील क्षेत्रों पर सेना पूरी तरह सतर्क और अलर्ट है, ताकि किसी भी तरह की घुसपैठ या आतंकवादी गतिविधि को रोका जा सके।

भारत बना डाटा सेंटरों का ग्लोबल हब, गूगल ने विशाखापत्तनम में 15 अरब डॉलर के एआई केंद्र की घोषणा की

(जीएनएस)। नई दिल्ली/विशाखापत्तनम। भारत अब वैश्विक स्तर पर डाटा सेंटरों के सबसे पसंदीदा ठिकानों में तेजी से उभर रहा है। इसी दिशा में अमेरिकी टेक दिग्गज गूगल ने मंगलवार को राजधानी दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम 'भारत एआई शक्ति' के दौरान घोषणा की कि वह अगले पांच वर्षों में आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में अपना सबसे बड़ा कृत्रिम मेधा (एआई) केंद्र स्थापित करेगी। इस परियोजना में कंपनी 15 अरब अमेरिकी डॉलर का भारी निवेश करेगी। यह अमेरिका के बाहर गूगल का सबसे बड़ा एआई और डाटा सेंटर परिसर होगा। इस एआई केंद्र में एक गीगावाट का डाटा सेंटर कॉम्प्लेक्स, बड़े पैमाने पर ऊर्जा स्रोत और विस्तारित फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क विकसित किया जाएगा, जो सिंगापुर, मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया समेत 12 देशों से जुड़ा होगा। गूगल की यह परियोजना अदाणी समूह के सहयोग से पूरी की जाएगी और इसे भारत का अब तक का सबसे बड़ा डाटा सेंटर कॉम्प्लेक्स माना जा रहा है। गूगल क्लाउड के सीईओ थॉमस कुरियन ने कहा कि यह एआई केंद्र न केवल कंपनी का अब तक का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय केंद्र होगा, बल्कि यह भारत में एआई युग की वास्तविक शुरुआत को भी रेखांकित करेगा। उन्होंने कहा कि इस परियोजना से भारत के व्यवसाय, शोधकर्ता और रचनाकार एआई के उपयोग और नवाचार में विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस ऐतिहासिक घोषणा का स्वागत करते हुए कहा कि "गूगल का यह एआई केंद्र भारत के 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण को सशक्त बनाएगा। यह हमारे नागरिकों को अत्याधुनिक डिजिटल उपकरण प्रदान करेगा और भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।" केंद्रीय संचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि यह निवेश भारत के राष्ट्रीय एआई मिशन का हिस्सा है, जो युवाओं, स्टार्टअप्स और नवाचारकों को आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराएगा। वहीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि यह कदम नीति, प्रौद्योगिकी और विकास के एक आदर्श संयोजन का उदाहरण है। भारत अब विश्व का नया डाटा सेंटर हब बनता जा रहा है। तेज़ी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था, सुदृढ़ इन्फ्रास्ट्रक्चर, ऊर्जा की उपलब्धता और सरकार की अनुकूल नीतियों ने भारत को वैश्विक कंपनियों के लिए सबसे आकर्षक गंतव्य बना दिया है। हाल ही में अमेजन, माइक्रोसॉफ्ट और ओपनएआई जैसी दिग्गज कंपनियों ने भी भारत में अपने डाटा सेंटर स्थापित करने की योजना घोषित की है। अमेजन ने वर्ष 2030 तक भारत में क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 12.7 अरब डॉलर निवेश करने का ऐलान किया है, जबकि ओपनएआई 1 गीगावाट का डाटा सेंटर स्थापित करने जा रही है। इसी प्रकार रिलायंस समूह ने भी जामनगर में दुनिया का सबसे बड़ा तीन गीगावाट क्षमता वाला डाटा सेंटर बनाने की घोषणा की है। विशेषज्ञों का कहना है कि एआई और डिजिटल अर्थव्यवस्था के प्रसार ने डाटा सेंटरों की मांग को कई गुना बढ़ा दिया है। एआई एप्लिकेशनों को भारी मात्रा में कंप्यूटिंग शक्ति और स्टोरेज की आवश्यकता होती है, जो केवल विशाल और आधुनिक डाटा सेंटरों से ही संभव है। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या एक अरब के करीब पहुंच चुकी है, जिससे यह विश्व के सबसे बड़े डिजिटल बाज़ारों में शामिल हो गया है। गूगल का यह निवेश ऐसे समय में आया है जब अमेरिका की बहुराष्ट्रीय कंपनियां अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और व्यापारिक प्रतिबंधों का सामना कर रही हैं। भारत सरकार ने हाल के महीनों में अमेरिकी टेक कंपनियों के प्रतिनिधियों से कई दौर की बातचीत कर यह भरोसा दिलाया है कि भारत स्थिर नीतियों और पारदर्शी कारोबारी माहौल के साथ तकनीकी निवेश के लिए सर्वोत्तम विकल्प बना रहेगा। यह एआई और डाटा सेंटर परियोजना न केवल तकनीकी दृष्टि से भारत को सशक्त बनाएगी बल्कि लाखों युवाओं के लिए रोजगार, प्रशिक्षण और नवाचार के अवसर भी सृजित करेगी।

जैसलमेर में भीषण बस हादसा: आग की लपटों में झुलसकर 20 यात्रियों की मौत, कई गंभीर

(जीएनएस)। जैसलमेर। राजस्थान के जैसलमेर जिले में मंगलवार दोपहर एक दिल दहला देने वाला हादसा सामने आया, जब जैसलमेर-जोधपुर नेशनल हाईवे पर चलती एक एसी स्लीपर बस में अचानक आग लग गई। कुछ ही क्षणों में पूरी बस आग के गोले में बदल गई। इस भयावह घटना में लगभग 20 यात्रियों की मौके पर ही जलकर मौत हो गई, जबकि 15 से अधिक लोग गंभीर रूप से झुलस गए, जिनमें दो बच्चे और चार महिलाएं भी शामिल हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसा दोपहर करीब साढ़े बारह बजे के आसपास हुआ, जब निजी ट्रैवल्स की यह बस जैसलमेर से जोधपुर की ओर जा रही थी। बताया जा रहा है कि बस के इंजन के पास से धुआं निकलने के कुछ ही क्षण बाद आग ने पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया। चालक ने बस को सड़क किनारे रोकने की कोशिश की, लेकिन तब तक आग इतनी फैल चुकी थी कि यात्रियों को बाहर निकलने का मौका नहीं मिला। बस में उस समय कुल 57 यात्री सवार थे। कुछ लोग खिड़कियों के शीशे तोड़कर किसी तरह बाहर निकल पाए, परंतु कई यात्री अंदर ही फंस गए। आसपास के लोगों ने फायर ब्रिगेड और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही जैसलमेर जिला प्रशासन, पुलिस और दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। लेकिन आग इतनी भीषण थी कि संपूर्ण बस मात्र कुछ ही मिनटों में राख में तब्दील हो गई। घायलों को तत्काल जवाहिर अस्पताल ले जाया गया, जहां से गंभीर रूप से झुलसे यात्रियों को जोधपुर रेफर कर दिया गया है। डॉक्टरों के अनुसार कई घायल 70 प्रतिशत तक झुलस चुके हैं, और उनकी हालत बेहद नाजुक है।

एर्नाकुलम के ईसाई स्कूल में हिजाब विवाद, हाई कोर्ट ने दी सुरक्षा

(जीएनएस)। एर्नाकुलम। केरल के एर्नाकुलम जिले में एक ईसाई स्कूल में हिजाब पहनने को लेकर विवाद गर्मा गया है, जिसके बाद स्कूल प्रबंधन ने सुरक्षा के लिए केरल हाई कोर्ट का रुख किया। सेंट रीटा पब्लिक स्कूल, जो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) से संबद्ध है, ने हाल ही में एक मुस्लिम छात्रा को हिजाब पहनकर प्रवेश करने से रोक दिया। इसके बाद स्कूल में अभिभावकों और सुरक्षा कर्मियों के बीच संघर्ष हुआ, जिससे स्कूल को पुलिस सुरक्षा की आवश्यकता पड़ गई। हाई कोर्ट ने स्कूल को सुरक्षा प्रदान करने का आदेश जारी किया है। मामले की अगली सुनवाई 10 नवंबर को निर्धारित की गई है। मामले की पृष्ठभूमि यह है कि आठवीं की छात्रा हिजाब पहनकर स्कूल पहुंची थी, लेकिन स्कूल ने उसे प्रवेश देने से इनकार कर दिया। इसके बाद 10 अक्टूबर को छात्रा के माता-पिता कुछ लोगों के साथ

स्कूल में घुस आए और सुरक्षाकर्मियों के अलावा अन्य लोगों के साथ मारपीट की। छात्रा के माता-पिता ने इसे धार्मिक अधिकार बताया। तनाव बढ़ने के कारण स्कूल ने पैरेंट-टीचर एसोसिएशन (PTA) की सलाह के बाद 13-14 अक्टूबर को स्कूल बंद रखा। स्कूल प्रबंधन की याचिका में कहा गया कि यह स्कूल एक ईसाई प्रतिष्ठान द्वारा संचालित है, जो 1998 से धर्मनिरपेक्ष रूप से शिक्षा प्रदान कर रहा है। स्कूल की यूनिफॉर्म नीति के अनुसार सभी छात्रों को निर्धारित ड्रेस कोड का पालन करना अनिवार्य है। प्रबंधन ने बताया कि अभिभावक प्रवेश के समय लिखित रूप में नियमों का पालन करने का वचन देते हैं। स्कूल ने हमलावर अभिभावकों के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन सुरक्षा नहीं मिलने के कारण प्रबंधन को हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा। हाई कोर्ट ने स्कूल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के आदेश जारी कर दिए हैं। इससे स्कूल प्रबंधन को छात्रों और स्टाफ की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। मामले की अगली सुनवाई में कोर्ट स्कूल यूनिफॉर्म नीति और धार्मिक अधिकारों के बीच संतुलन स्थापित करने संबंधी निर्णय ले सकती है।

ट्रंप की सख्त चेतावनी के बाद ज़ेलेंस्की का निर्णायक अमेरिका दौरा – क्या यूक्रेन को मिलेगी टॉमहॉक मिसाइलों की ताकत?

(जीएनएस)। यूक्रेन और रूस के बीच जारी युद्ध ने अब एक नया मोड़ ले लिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा रूस को दी गई सीधी चेतावनी के बाद यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की इस सप्ताह अमेरिका की यात्रा पर जा रहे हैं। यह यात्रा सिर्फ एक औपचारिक दौरा नहीं, बल्कि युद्ध की दिशा तय करने वाला कूटनीतिक क्षण मानी जा रही है।

ज़ेलेंस्की ने साफ कहा है कि उनका मुख्य उद्देश्य अमेरिका से लंबी दूरी की टॉमहॉक मिसाइलें प्राप्त करने की संभावना तलाशना है। यह वही मिसाइलें हैं जिनकी रेंज इतनी अधिक है कि वे रूस के भीतर गहराई तक स्थित लक्ष्यों को भी भेद सकती हैं। यदि यह सौदा होता है, तो यह युद्ध का सबसे बड़ा रणनीतिक परिवर्तन साबित हो सकता है, क्योंकि इससे यूक्रेनी सेना को अब तक की सबसे बड़ी सामरिक बढ़त मिल जाएगी।

अमेरिका और रूस के बीच पहले से ही तनाव चरम पर है, और ट्रंप की हालिया चेतावनी ने आग में घी डालने का काम किया है। ट्रंप ने रविवार को रूस को स्पष्ट संदेश दिया कि यदि मास्को ने युद्ध समाप्त करने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया, तो अमेरिका यूक्रेन को टॉमहॉक क्रूज़ मिसाइलों की आपूर्ति की अनुमति देगा। इस बयान के कुछ ही घंटे बाद मॉस्को ने इसे "बेहद चिंताजनक" बताया और कहा कि ऐसी किसी भी अमेरिकी कार्रवाई से द्विपक्षीय संबंधों पर "गंभीर और दीर्घकालिक प्रभाव" पड़ेगा।

इस बीच, ज़ेलेंस्की ने अपने बयान में कहा कि वह शुक्रवार को राष्ट्रपति ट्रंप से मुलाक़ात कर सकते हैं। इस मुलाक़ात में

वायु रक्षा प्रणाली को मजबूत करने, रूस पर दबाव बनाए रखने और ऊर्जा अवसंरचना की सुरक्षा के मुद्दे प्रमुख रहेंगे। उन्होंने बताया कि यूक्रेन के बिजली और गैस नेटवर्क पर रूसी हमले लगातार बढ़ रहे हैं और उन्हें स्थायी समाधान के लिए अमेरिकी तकनीकी और सैन्य सहायता की आवश्यकता है।

ज़ेलेंस्की ने यह भी जोड़ा कि उनकी यह यात्रा यूरोपीय संघ की विदेश नीति प्रमुख काजा कल्लास के साथ हुई बैठक के बाद तय की गई है, जहाँ यूरोपीय सुरक्षा सहयोग पर विस्तृत चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त, वाशिंगटन में पहले से मौजूद यूक्रेनी प्रतिनिधिमंडल, जिसकी अगुवाई प्रधानमंत्री यूलिया स्विरिडेन्को कर रही हैं, प्रारंभिक वार्ताओं में लगा हुआ है। माना जा रहा है कि ज़ेलेंस्की की उपस्थिति इन वार्ताओं को निर्णायक रूप से आगे बढ़ाएगी।

अमेरिकी रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यूक्रेन को टॉमहॉक जैसी मिसाइलें मिलती हैं, तो यह रूस की गहराई तक की सैन्य और औद्योगिक ढाँचे को निशाना बनाने में सक्षम होगा, जिससे युद्ध की गति पूरी तरह बदल सकती है। वहीं दूसरी ओर, रूस ने पहले ही चेतावनी दे दी है कि किसी भी प्रकार की ऐसी सैन्य आपूर्ति को वह "सीधा युद्धी हस्तक्षेप" मानेगा।

स्थिति अब अत्यंत संवेदनशील हो चुकी है। वाशिंगटन, मॉस्को और कीव – तीनों ही राजधानियाँ आगामी वार्ता पर टकटकी लगाए हैं। दुनिया की नज़र इस पर टिकी है कि क्या ट्रंप और ज़ेलेंस्की की मुलाक़ात युद्ध को समाप्त करने की दिशा में कोई नई उम्मीद जगाएगी, या यह निर्णय संघर्ष को और अधिक भड़काएगा।

इतिहास के इस निर्णायक क्षण में यह स्पष्ट है कि अब शब्दों की नहीं, फैसलों की घड़ी है। यदि टॉमहॉक मिसाइलों की डील पर मुहर लगती है, तो यह न केवल यूक्रेन की सैन्य क्षमताओं को बदल देगा बल्कि विश्व राजनीति की धुरी को भी नई दिशा में मोड़ देगा।

हमास की कैद से लौटा एक नायक का शव: नेपाली हिंदू छात्र बिपिन जोशी की बलिदान गाथा

(जीएनएस)। दुनिया के सबसे जटिल और संवेदनशील संघर्षों में से एक — इसराइल और हमास के बीच चल रही लड़ाई — के बीच सोमवार की रात एक मार्मिक अध्याय जुड़ गया। दो साल से अधिक समय तक लापता रहे नेपाली हिंदू छात्र बिपिन जोशी का शव आखिरकार हमास ने इज़राइली अधिकारियों को सौंप दिया। एक ऐसा युवक, जिसने युद्ध की भीषणता में भी मानवीय साहस और धर्मनिष्ठा का परिचय दिया, अब अपनी मातृभूमि नेपाल लौटने की तैयारी में है — लेकिन इस बार शव के रूप में।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मध्यस्थता में चल रहे मध्य पूर्व शांति सम्मेलन के दौरान यह घटना सामने आई। "गाजा शांति समझौता" के तहत हमास द्वारा 20 जीवित बंधकों को रिहा किए जाने का निर्णय ऐतिहासिक सफलता के रूप में देखा जा रहा था, परंतु बिपिन जोशी की मृत्यु की खबर ने इस उत्साह पर गहरा साया डाल दिया। इज़राइल में नेपाल के राजदूत धन प्रसाद पंडित ने पुष्टि की कि जोशी का पार्थिव शरीर हमास ने इज़राइल को सौंप दिया है और उसे तेल अवीव ले जाया जा रहा है।

इज़राइली सेना के प्रवक्ता एफी डेफ्रिन ने बताया कि हमास ने कुल चार बंधकों के शव लौटाए हैं, जिनमें बिपिन जोशी भी शामिल हैं। शवों की पहचान डीएनए परीक्षण के बाद सुनिश्चित की जाएगी। नेपाली दूतावास के समन्वय में तेल अवीव में ही उनका अंतिम संस्कार किए जाने की संभावना है, जिससे इस वीर छात्र की आत्मा को सम्मानपूर्वक विदाई दी जा सके।

बिपिन जोशी की कहानी केवल एक त्रासदी नहीं, बल्कि अदम्य साहस और मानवता की प्रेरक गाथा है। नेपाल के एक छोटे से कस्बे से निकला यह 23 वर्षीय युवा सितंबर 2023 में कृषि शिक्षा और कार्य प्रशिक्षण के लिए इज़राइल गया था। उसका उद्देश्य था आधुनिक कृषि तकनीकों को सीखकर अपने देश में कुछ नया करना। वह कार्यक्रम गाजा सीमा के पास किबुत्ज़ अलुमिम में आयोजित था — एक शांतिपूर्ण शैक्षणिक परिसर, जो जल्द ही आतंक के साये में बदल गया।

7 अक्टूबर, 2023 की सुबह, जब हमास ने इज़राइल के दक्षिणी क्षेत्रों पर अप्रत्याशित हमला किया, तो बिपिन और उसके साथी छात्रों ने बम आश्रय में शरण ली। कुछ ही पलों में गोलीबारी और विस्फोटों की गूंज ने चारों ओर भय का वातावरण बना दिया। उसी दौरान हमास के आतंकवादियों ने आश्रय के अंदर ग्रेनेड फेंके। एक ग्रेनेड फट गया और कई छात्र घायल हो गए, परंतु जब दूसरा ग्रेनेड अंदर गिरा, तब बिपिन जोशी ने बिना एक क्षण गँवाए उसे उठाकर बाहर फेंक दिया। उस क्षण में उन्होंने अपने जीवन की परवाह किए बिना अपने साथियों की जान बचा ली। वह वीरता का क्षण उनके जीवन का अंतिम निर्णायक अध्याय बन गया।

घटना के तुरंत बाद जोशी को हमास के आतंकवादियों ने बंदी बना लिया और गाजा की ओर ले गए। कुछ दिनों बाद इज़राइली सेना द्वारा जारी फुटेज में उन्हें शिफा अस्पताल में घसीटते हुए देखा गया — वही उनका अंतिम दृश्य था। उसके बाद कोई जानकारी नहीं मिली। जोशी के परिजनों ने उम्मीद नहीं छोड़ी। उनकी माँ और बहन इज़राइल और अमेरिका तक पहुँचीं, विश्व नेताओं से गुहार लगाई कि बिपिन को जिंदा वापस लाया जाए। लेकिन किस्मत ने उन्हें इस बार अपने बेटे की शहादत का ही समाचार दिया।

बिपिन जोशी का जीवन यह साबित करता है कि वीरता धर्म, राष्ट्र या सीमाओं से नहीं बंधती। वह नेपाल का था, पर उसकी निडरता ने दुनिया को झकझोर दिया। उसने न तो किसी युद्ध में हथियार उठाया, न किसी देश की ओर से लड़ाई लड़ी — परंतु उसने उस क्षण में मानवता के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया। आज जब उसका पार्थिव शरीर तेल अवीव से नेपाल लौटेगा, तब उसके गांव की मिट्टी में एक शहीद पुत्र का आगमन होगा — जो न सैनिक था, न योद्धा, लेकिन जिसने अपने साहस से अमरता प्राप्त की।

यह कहानी केवल एक बंधक की नहीं, बल्कि उन सभी निर्दोष आत्माओं की है जो युद्ध की राजनीति में कुचल दी जाती हैं। बिपिन जोशी की मुस्कान, उसका साहस और उसका बलिदान अब एक स्मृति नहीं, बल्कि एक संदेश है — कि जब भी अंधकार अपने चरम पर हो, तब एक निडर आत्मा अपनी रोशनी से दुनिया को याद दिलाती है कि मानवता अब भी जीवित है।

जैसलमेर में भीषण त्रासदी – यात्रियों से भरी बस बनी आग का गोला, 12 लोगों की दर्दनाक मौत से मचा कोहराम

(जीएनएस)। राजस्थान का मरुस्थलीय जिला जैसलमेर मंगलवार की सुबह एक हृदयविदारक घटना का गवाह बना। रेत के सुनहरे टीलों के बीच दौड़ती एक बस कुछ ही क्षणों में आग के भयंकर गोले में बदल गई। यह बस जैसलमेर से जोधपुर जा रही थी, और वार म्यूजियम के पास पहुंचते ही इसमें अचानक धुआँ उठने लगा। देखते ही देखते लपटें आसमान छूने लगीं, और यात्रियों की चीख-पुकार से पूरा इलाका दहल उठा। बस में कुल 57 यात्री सवार थे। जब धुआँ फैलने लगा, तो कुछ लोगों ने हिम्मत जुटाकर खिड़कियाँ तोड़ीं और किसी तरह बाहर निकल आए, लेकिन कई यात्री अंदर ही फँसे रह गए। आग इतनी तीव्र थी कि बस के दरवाज़े और खिड़कियाँ कुछ ही पलों में पिघलने लगीं। सड़क किनारे से गुजर रहे राहगीरों ने तुरंत पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी, और कुछ लोगों ने अपनी जान जोखिम में डालकर यात्रियों को बचाने की कोशिश की, लेकिन लपटों की भीषणता के आगे सभी प्रयास सीमित पड़ गए। कुछ ही देर में पुलिस और फायर ब्रिगेड की गाड़ियाँ मौके पर पहुँचीं। दमकलकर्मियों ने पूरी ताकत लगाकर आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। बस पूरी तरह जल चुकी थी और अंदर का दृश्य रोंगटे खड़े कर देने वाला था। घायल यात्रियों को तुरंत तीन एंबुलेंस की मदद से जवाहिर अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ डॉक्टरों ने 17 लोगों को भर्ती किया। उनमें से 12 यात्रियों ने इलाज के

दौरान दम तोड़ दिया। बाकी गंभीर रूप से झुलसे यात्रियों की हालत भी नाज़ुक बनी हुई है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया और जिला प्रशासन को तत्काल राहत और बचाव कार्य तेज़ करने के निर्देश दिए। उन्होंने अस्पताल प्रशासन से भी कहा कि घायलों को हरसंभव चिकित्सा सहायता और बेहतर उपचार दिया जाए। मुख्यमंत्री कार्यालय ने मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए मुआवज़े की घोषणा पर भी विचार शुरू किया है। स्थानीय लोगों के अनुसार, आग लगने का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। कुछ यात्रियों ने बताया कि आग लगने से पहले बस के पीछे से जलने जैसी गंध आ रही थी। संभावना जताई जा रही है कि बस के इंजन या विद्युत सर्किट में शॉर्ट-सर्किट के कारण आग भड़की होगी।

पश्चिम रेलवे द्वारा साबरमती ⇌ गोरखपुर के बीच अनारक्षित त्यौहार स्पेशल ट्रेन चलाई चाएगी

ट्रेन क्र.	प्रस्थान स्टेशन और गंतव्य	सेवा की तिथियाँ	प्रस्थान	आगमन
09429	साबरमती - गोरखपुर (अनारक्षित स्पेशल)	16.10.2025 से 26.10.2025	8:50 बजे (गुरु., शुक्र. और रवि.)	10:00 बजे (दुसरे दिन)
09430	गोरखपुर - साबरमती (अनारक्षित स्पेशल)	17.10.2025 से 27.10.2025	13:00 बजे (शुक्र, शनिऔर सोम)	15:30 बजे (दुसरे दिन)

होल्टः महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, मारवाड़, अजमेर, जयपुर, गांधी नगर, जयपुर, दौसा, बांदीकुई, भरतपुर, ईदगाह आगरा, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी, उन्नाव, लखनऊ जंक्शन, बाराबंकी, गोंडा, मनकापुर और बस्ती स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में।

संरचना: सामान्य द्वितीय श्रेणी के कोच।

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

उपरोक्त ट्रेन विशेष किराए पर विशेष ट्रेन के रूप में चलेगी।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly
हमें फॉलो करें: X.com/WesternRly
हमें फॉलो करें: Instagram/WesternRly

कृपया सभी आरक्षित टिकटों के लिए मूल पहचान पत्र साथ लाएँ।

संपादकीय

जोखिमभरी शांति

अब भले ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने दंभी तेवरों की तर्ज पर लाख दावे करते रहें कि गाजा युद्ध समाप्त हो गया है। मगर हकीकत है कि एक छोटी सी चिंगारी भी युद्ध को भड़का सकती है। एक हकीकत है कि दो साल से जारी युद्ध में जहां एक ओर भले ही गाजा पूरा तबाह हो गया हो, लेकिन इसके बावजूद हमास के लड़ाके पीछे हटने को तैयार नहीं दिखे। उनके पास ट्रंप के भारी दबाव व परिस्थितियों के चलते शांति समझौते को स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प बचा ही नहीं था। वहीं दो साल तक युद्ध लड़ते-लड़ते इस्राइली सेना में भी थकान देखी गई थी, साथ ही आतंरिक दबाव युद्ध रोकने के लिये प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू पर भी बराबर बना हुआ था। ट्रंप के बड़बोले दावों को पश्चिमी एशिया और शेष दुनिया बेशक गंभीरता से न लेती रही हो, लेकिन अब एक हकीकत सामने है कि उनके हस्तक्षेप ने गाजा में फिलहाल तोपों को शांत किया है। डोनाल्ड ट्रंप का सोमवार को इस्राइल में एक नायक जैसा स्वागत किया गया। अमेरिकी मध्यस्थता वाले युद्धविराम समझौते के बाद हमास ने आखिरकार शेष जीवित बचे बीस इस्राइली बंधकों को रिहा कर दिया। जिसके बाद इस्राइल में किसी बड़े उत्सव जैसा जश्न दिखा। बहरहाल, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अभी भी इस्राइल-हमास युद्धविराम समझौता नाजुक बना हुआ है। इसकी वास्तविक परीक्षा आने वाले दिनों में, बहुत संभव है कुछ हफ्तों में हो। इस संघर्षरत क्षेत्र में स्थायी शांति सुनिश्चित करने के लिये जरूरी है कि प्रमुख हितधारकों की ओर से गंभीर प्रयास लगातार होते रहें। वर्तमान समय में सबसे बड़ी चुनौती भूतहा खण्डहर में तब्दील हो चुके गाजा के पुनर्निर्माण की होगी। दो साल से लगातार जारी युद्ध के चलते यह इलाका मलबे के ढेर में तब्दील हो चुका है। कहना मुश्किल है कि आने वाले वक्त में इस्राइल की निरंकुशता पर किसी हद तक अंकुश लग पाता है, ताकि गाजा के लोग फिर से सामान्य जीवन की कोशिश में किसी हद तक सफल हो सकें।

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि इस्राइल और हमास के संघर्ष ने करीब बाइस लाख से अधिक लोगों को बेघर करके भुखमरी के कगार पर पहुंचा दिया है। ऐसे में दोनों पक्षों के लिये समझौते के पहले चरण को पूरी तरह से लागू करना बेहद जरूरी होगा। जिसमें बंधकों व कैदियों की रिहाई, गाजा में मानवीय सहायता को अनवरत जारी रखना और इस्राइली सेनाओं की गाजा के मुख्य शहरों से आंशिक वापसी सुनिश्चित करना भी शामिल है। यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो इसके बाद ही दूसरे चरण की बातचीत की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। यह बेहद मुश्किल चुनौतियों वाला चरण होगा। इस दौरान कई संवेदनशील मुद्दे सामने होंगे। सवाल यह भी रहेगा कि लड़ाई खत्म होना एक स्थायी प्रक्रिया बन सकेगी। युद्ध समाप्ति के बाद घनी आबादी वाले इलाके में शासन कैसे चलेगा? क्या समझौते के अनुरूप हमास की भूमिका प्रशासन में खत्म हो जाएगी? क्या वास्तव में हमास हथियार डाल देगा? हालांकि, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच इस्राइली संसद में ट्रंप ने दावा किया है कि हमास उनकी निशस्त्रीकरण योजना के प्रावधानों का पालन करेगा। लेकिन इस चरमपंथी समूह ने फ़लस्तीन को राज्य का दर्जा मिलने से पहले इस संभावना से इनकार किया है। बताया जा रहा है कि ट्रंप एक अंतर्राष्ट्रीय निकाय का नेतृत्व करने वाले हैं, जो गाजा के शासन के लिये एक अस्थायी गैर-राजनीतिक समिति के कामकाज की देखरेख करेगा। निस्संदेह, इस भावनात्मक मुद्दे को राजनीतिक रूप से कुशलता पूर्वक संभालने की जरूरत है। निर्विवाद रूप से इस विवाद के पटाक्षेप के लिये दो-राज्य समाधान के लिये स्पष्ट समय-सीमा का अभाव एक कसक के रूप में महसूस किया जाता रहेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति अपनी पीठ थपथपा सकते हैं, लेकिन देर-सवेर उन्हें अहसास हो सकता है कि उन्होंने इस बेहद जटिल मुद्दे के समाधान की कोशिशों में अपनी क्षमता से अधिक काम ले लिया है। दशकों से इस्राइल और फलस्तीनियों के संघर्ष की जड़ें गहरी हैं। जिसका स्थायी समाधान एक कल्पित प्रश्न जैसा ही है।

तालिबान को सैन्य मदद की आशंका से सहमा पाक

> बाहर देखने पर यह लग रहा है, कि अफ़ग़ानिस्तान-भारत के बीच आर्थिक और मानवीय सहयोग के हवाले से कूटनीति हो रही है, लेकिन पाकिस्तान के रणनीतिकार इसकी पड़ताल में लगे हैं कि नई दिल्ली, काबुल को इंटेलिजेंस शेयरिंग से लेकर सैन्य साज़ो-सामान की मदद तो नहीं कर रहा है?

पाक-अफ़ग़ान युद्ध ऐसे ही नहीं रुका है। उसका सबसे बड़ा कारण भारत रहा है। दावेदारी सऊदी अरब, यूएई और ईरान की तरफ़ से हो रही है कि उनके समझाने-बुझाने पर दोनों पक्ष मान गए हैं। इस तथाकथित शांति रथ के चौथे सवार, राष्ट्रपति ट्रम्प भी हो गए हैं। ट्रम्प ने बयान दिया, 'मैं तो शांति कराने में माहिर, 'पीस एक्सपर्ट' हूं। भारत-पाक को टैरिफ की धमकी दी, वो मान गए।' अब कोई पूछे, अफ़ग़ान अमीरात ट्रम्प की टैरिफ धमकी को गंभीरता से लेगा क्या? उनके पास खोने के लिए है क्या? ख़ैर, इस हंसी-मज़ाक़ से अलग, जो कुछ पाकिस्तानी प्रिंट मीडिया ने अपने सत्ता प्रतिष्ठान को समझाया है, वो बिलकुल 'कन्विंसिंग' और निशाने पर था।

भारत क्यों कारण रहा, इसे समझने के लिए पाकिस्तान से प्रकाशित दो अख़बारों के सम्पादकीय को पढ़ लेना काफी होगा। 'अफ़ग़ान क्लैशेज़ ' शीर्षक से द डॉन सम्पादकीय लिखता है, 'पाकिस्तान को इस बात से भी सावधान रहना चाहिए कि भारत और अफ़ग़ान तालिबान, जो कभी कट्टर दुश्मन थे, के बीच अचानक संबंधों में गर्मजोशी आ गई है, और हाल ही में अफ़ग़ान विदेशमंत्री का नई दिल्ली में सौहार्दपूर्ण स्वागत किया गया। इसलिए, काबुल के साथ संबंधों को, चाहे कितने भी तनावपूर्ण क्यों न हों, और बिगड़ने देना इस देश के हित में नहीं होगा।'

'दिल्ली-काबुल पैचअप' शीर्षक से एक्सप्रेस ट्रिब्यून का सम्पादकीय है, 'चूंकि पाकिस्तान ने हमेशा अपने शत्रुओं के प्रति, चाहे वह भारत हो या अफगानिस्तान, शांति का हाथ बढ़ाया है। आपसी सम्मान और सौहार्द के आधार पर संबंध बनाने की कोशिश की है, इसलिए अब समय आ गया है कि कूटनीति को एक और मौका दिया जाए। अफगान तालिबान अधिकारियों के साथ बातचीत की जाए, ताकि आतंकवाद से निपटने में सहयोग किया जा सके तथा संबंधों में शांति सुनिश्चित की जा सके।'

भारत में मुत्ताक़ी के भव्य स्वागत को लेकर पाकिस्तान के सीने पर सांप लोट रहा है। पाकिस्तानी मीडिया का एक हिस्सा गुरुवार को काबुल में की गयी सर्जिकल स्ट्राइक को पाकिस्तान की बेवकूफाना हरकत मान रहा है। डॉन ने लीपापोती करते हुए लिखा, 'फ़िलहाल, शत्रुता समाप्त हो गई है। और अब इस मामले को और बिगड़ने से रोकना चाहिए। हालांकि अतीत में छोटे स्तर की झड़पें हुई, लेकिन हाल के वर्षों में यह सबसे बड़ी झड़प है।'

तालिबान शासन ने 85 पाकिस्तानी सैनिकों-अफसरों को ढेर किये जाने का दावा किया है। जबकि पाक सेना के जनरल केवल 23 सैनिकों के मारे जाने की बात स्वीकार कर रहे हैं। सबसे मुश्किल में सियासतदां फंसे हैं। 'ख़ुद मियां फ़ज़ीहत' जनता को जवाब कैसे दें? राष्ट्रपति ज़रदारी ने 'भारत द्वारा प्रायोजित' आतंकवाद के खतरे को 'क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए सबसे बड़ा ख़तरा' बताया। राष्ट्रपति आसिफ अली ज़रदारी और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अफगानिस्तान की हालिया 'उकसावे वाली कार्रवाइयों' की कड़ी निंदा की, और दोहराया कि पाकिस्तान राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करेगा।

दरअसल, इन्हें भारत का डर सताने लगा है कि इस बार डुरंड लाइन पर कोई 'ग्रेट गेम' दिल्ली की तरफ से न हो जाये। डुरंड रेखा अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच 2,640 किमी लंबी एक अंतरराष्ट्रीय सीमा है। यह रेखा पश्तून जनजातीय क्षेत्र से होकर दक्षिण में बलोचिस्तान से बीच से होकर गुजरती है। ये दोनों इलाके आतंकग्रस्त हैं, जहां कबीलाई क्षत्रपों की चलती है। पाकिस्तान के कॉलमनिस्ट शहीद जावेद बुर्की कहते हैं, 'वाशिंगटन और इस्लामाबाद, दोनों ही इस्लामिक स्टेट-खोरासन और टीटीपी जैसे आतंकी समूहों को नियंत्रण में लाने में काबुल की मदद चाहते हैं।' अफ़ग़ानिस्तान की आर्थिक नाकेबंदी अब भी अमेरिका ने कर रखी है। अफ़ग़ानिस्तान के केंद्रीय बैंक के अरबों डॉलर की डिपॉज़िट पर अमेरिका जिस तरह कुंडली मारे बैठा है, उससे इस देश की बैंकिंग प्रणाली चरमरा रही है। अमेरिका की आंखें अफ़ग़ान ज़मीन के नीचे छिपे दुर्लभ खनिजों पर गड़ी हैं। दुनिया मानती है कि अफ़ग़ानिस्तान में समृद्ध खनिज संसाधनों के भंडार हैं, जो कई मूल्यवान उत्पादों जैसे इलेक्ट्रिक वाहन, विमान, मिसाइल, चिकित्सा उपकरण, घरेलू उपकरण और अन्य उच्च-मूल्य वाले उत्पादों के निर्माण में महत्वपूर्ण घटक हैं।

पेंटागन ने बहुत पहले उसका सर्वे करा लिया था, जब मित्र सेनाएं तैनात थीं। माना जाता है कि यह खरबों डॉलर में है। दुर्लभ खनिजों से भरा क्षेत्र कज़ाकिस्तान से शुरू होकर अफ़ग़ानिस्तान- पाकिस्तान के कबायली इलाकों में समाप्त होता है। चीन की उपस्थिति भी इसी वजह से है। और इन सबों को डर भारत से है, कि यदि दिल्ली ने अफ़ग़ानिस्तान में इस बार सही से डेरा जमा लिया, तो फिर दुर्लभ खनिजों की बंदरबांट सहजता से नहीं हो पायेगी।

इस बार पाकिस्तान के खिलाफ अफ़ग़ान पब्लिक भी सड़क पर उतर आई है। उसकी वजह शरणार्थी हैं। करीब 18 लाख से ज़्यादा अफ़ग़ान शरणार्थी आर्थिक मंदी और कठोर प्रतिबंधों की वजह से देश लौटने को मजबूर हुए हैं। सबसे भयावह तस्वीरें ईरान और पाकिस्तान से वापस भगाये गए अफ़ग़ान शरणार्थियों की है। इसलिए, पाकिस्तान के जो लोग मुस्लिम एकता की बात करते हैं, उनसे पूछा जाना चाहिए, क्या भय और ग़ुरबत से भागे अफ़ग़ान शरणार्थी मुसलमान नहीं थे? केवल एक साल में पाकिस्तान से 3,52,000 अफ़ग़ान शरणार्थी भगाये गए हैं। पाक अधिकारियों ने उन्हें अस्थायी शरणार्थी कार्ड देना बंद कर दिया। जिनके वीज़ा समाप्त हो गए, उन लोगों को पकड़ने के लिए छापेमारी तेज़ कर दी। आज जब लगा, कि तालिबान नेतृत्व युद्ध की स्थिति में भारत से मदद ले सकता है, तो 'मुस्लिम सॉलिडरिटी' का अनहद नाद आरम्भ हो गया। बाहर देखने पर यह लग रहा है, कि अफ़ग़ानिस्तान-भारत के बीच आर्थिक और मानवीय सहयोग के हवाले से कूटनीति हो रही है, लेकिन पाकिस्तान के रणनीतिकार इसकी पड़ताल में लगे हैं कि नई दिल्ली, काबुल को इंटेलिजेंस शेयरिंग से लेकर सैन्य साज़ो-सामान की मदद तो नहीं कर रहा है? 12 मार्च, 2013 को तत्कालीन रक्षा मंत्री एके एंटनी ने संसद को जानकारी दी थी, कि 4 अक्तूबर, 2011 को अफ़ग़ानिस्तान के साथ रणनीतिक साझेदारी समझौता (एसपीए) हुआ था, जो दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग का प्रावधान करता है। 'एसपीए' के अंतर्गत भारत, अफ़ग़ान राष्ट्रीय सुरक्षाबलों के प्रशिक्षण, उपकरण और सैन्य क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में सहायता करने का संकल्प लिया गया था। इसकी धाराओं में स्पष्ट है कि रक्षा क्षेत्र में भारत की सहायता अफ़ग़ानिस्तान सरकार के विशिष्ट अनुरोधों पर आधारित होगी।' वह रणनीतिक समझौता हामिद करज़ई की मौजूदगी में नई दिल्ली में हुआ था। रावलपिंडी की नींद 'एसपीए' की वैधता को लेकर उड़ी हुई है, जिसे आधार बनाकर मुत्ताक़ी भारत से सैन्य मदद मांग सकते हैं।

प्रेरणा

अटूट संकल्प की मिसालः रोजलिंड फ्रैंकलिन की कहानी

विज्ञान के इतिहास में कुछ नाम ऐसे हैं जो किसी खोज से अधिक उस संघर्ष के प्रतीक बन जाते हैं, जिसके बिना कोई भी महान आविष्कार संभव नहीं होता। रोजलिंड फ्रैंकलिन ऐसा ही एक नाम हैं — एक ऐसी वैज्ञानिक जिनका जीवन यह सिखाता है कि निरंतर प्रयास और अटूट संकल्प से असंभव भी संभव बन जाता है। बीसवीं सदी का मध्य समय था। वैज्ञानिक जगत में डीएनए की संरचना को लेकर उत्सुकता चरम पर थी। यह ज्ञात तो था कि यह वही अणु है जो जीवन की जानकारी एक पीढ़ी से दूसरी तक पहुँचाता है, पर इसकी वास्तविक आकृति, इसका रहस्य अब भी पर्दे में था। लंदन के किंग्स कॉलेज में युवा वैज्ञानिक रोजलिंड फ्रैंकलिन इस रहस्य को सुलझाने में लगी थीं। वे अत्यंत बुद्धिमान, अनुशासित और अपने काम के प्रति पूरी तरह समर्पित थीं। लेकिन उनके सामने चुनौतियों का एक ऐसा पहाड़ था जिसे पार करना किसी साधक के तप के समान कठिन था। उनका काम था एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी तकनीक से डीएनए की संरचना की तस्वीरें लेना। यह तकनीक अत्यंत संवेदनशील थी — थोड़ी-सी भी ग़लती होने पर महीनों का परिश्रम व्यर्थ हो जाता। उनके प्रयोगशाला के उपकरण अत्याधुनिक तो थे, लेकिन बेहद नाजुक। तापमान, आर्द्रता, रासायनिक अनुपात और कोण — हर एक तत्व पर गहन नियंत्रण आवश्यक था। फ्रैंकलिन जब इन प्रयोगों पर काम करतीं, तो कई बार रातें यूँ ही बीत जातीं, वे प्रयोगशाला में ही रुक जातीं। कैमरे की पोज़िशन को ठीक करना, एक्स-रे की तीव्रता को नियंत्रित करना और धुंधली तस्वीरों को देखकर त्रुटियों का कारण ढूँढ़ना — यह सब उनके दिनचर्या का हिस्सा बन गया था।

कई बार प्रयोग विफल होते, कैमरे में ली गई तस्वीरें अस्पष्ट आतीं, और उनके सहयोगी व्यंग्यपूर्वक कहते — "यह तरीका बेकार है, इससे कुछ हासिल नहीं होगा।" लेकिन रोजलिंड ने कभी हार नहीं मानी। वे जानती थीं कि सच्चा ज्ञान आसानी से नहीं मिलता। उन्होंने कहा था, "यदि मैं लगातार प्रयास नहीं करूंगी, तो यह ज्ञान कभी भी सामने नहीं आएगा।" इस एक वाक्य में उनके जीवन का दर्शन छिपा था।

वह हर विफलता को एक नई सीख मानतीं। उन्होंने बार-बार प्रयोग दोहराए, विभिन्न कोणों से तस्वीरें लीं, कैमरे की स्थिति बदली, रसायनों की शुद्धता सुनिश्चित की और हर छोटी गलती को सुधारती गईं। धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि डीएनए की संरचना किसी साधारण सीढ़ी जैसी नहीं बल्कि किसी कुंडलित आकार की है। लेकिन यह आकार कितना जटिल है, यह तब तक रहस्य ही रहा जब तक उन्होंने एक रात 'फोटो 51' नहीं ली। वह रात विज्ञान के इतिहास में अमर हो गई। उस समय उन्होंने डीएनए के नमूने पर एक्स-रे किरणें डालीं और कैमरे से जो तस्वीर प्राप्त हुई, वह बाकी सभी तस्वीरों से अलग थी। उसमें एक अद्भुत पैटर्न दिखाई दे रहा था — ऐसा प्रतीक जो स्पष्ट रूप से दोहरी हेलिक्स यानी 'डबल हेलिक्स' का संकेत दे रहा था। रोजलिंड ने उस तस्वीर को देखा और उनके चेहरे पर एक सधी हुई मुस्कान आ गई। उन्हें पता चल गया था कि वे जीवन के सबसे बड़े रहस्य के एक कदम पास पहुँच गई हैं।

बाद में यही तस्वीर, जिसे आज दुनिया 'फोटो 51' के नाम से जानती है, वैज्ञानिक जेम्स वाटसन और फ्रांसिस क्रिक के लिए निर्णायक साबित हुई। उन्होंने इसी के आधार पर डीएनए का डबल हेलिक्स मॉडल प्रस्तुत किया, जिसके लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला। दुर्भाग्यवश, रोजलिंड फ्रैंकलिन का नाम उस सूची में शामिल नहीं किया गया, क्योंकि वे इससे पहले ही स्वर्ग सिधार चुकी थीं।

लेकिन इतिहास और विज्ञान की सच्चाई यही है कि जिस ज्ञान ने मानवता को जीवन के रहस्यों की नई समझ दी, उसकी जड़ में रोजलिंड का तप, धैर्य और अटूट संकल्प छिपा है। उन्होंने यह दिखा दिया कि सच्चे शोधकर्ता के लिए सबसे बड़ी जीत पुरस्कार नहीं, बल्कि वह क्षण होता है जब प्रकृति अपने रहस्यों का परदा उठाती है।

आज भी जब वैज्ञानिक प्रयोगशाला में घंटों बिताते हैं, असफलता के बाद भी फिर से प्रयास करते हैं, तो कहीं न कहीं रोजलिंड फ्रैंकलिन की आत्मा उनके भीतर जीवित होती है — यह प्रेरणा देती है कि "सफलता उन्हीं की होती है जो थककर भी रुकते नहीं।"

उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि निरंतर प्रयास, दृढ़ संकल्प और विश्वास से कोई भी अंधकार इतना गहरा नहीं कि उसमें सत्य का प्रकाश न पहुँच सके। रोजलिंड ने संसार को यह सच्चाई दिखा दी कि जब मनुष्य का प्रयास निरंतर होता है, तो विज्ञान भी उसे अपना रहस्य खोलकर दिखाता है — और यही है "निरंतर प्रयास से सफलता" की सबसे महान परिभाषा।

मंगोलिया से सामरिक साझेदारी कर मोदी ने चीन और रूस के प्रभाव को संतुलित कर दिया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मंगोलिया के राष्ट्रपति खुरेलसुख उखना के बीच हुई वार्ता ने भारत और मंगोलिया के बीच द्विपक्षीय रिश्तों की गहराई और बहुआयामी महत्व को पुनः रेखांकित किया है। यह बैठक केवल औपचारिक कूटनीतिक मुलाकात नहीं थी, बल्कि यह दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामरिक संबंधों को नई ऊर्जा देने का प्रयास थी। वार्ता के दौरान दोनों देशों ने मानवतावादी सहायता, मंगोलिया में सांस्कृतिक धरोहर स्थलों के पुनरुद्धार, आव्रजन, भूविज्ञान और खनिज संसाधनों, सहकारी समितियों के विकास और डिजिटल समाधानों के साझा उपयोग के लिए समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए। इसके अतिरिक्त, भारत और मंगोलिया के 70 वर्षों के द्विपक्षीय संबंधों की स्मृति में एक संयुक्त डाक टिकट भी जारी किया गया। ये पहलें स्पष्ट रूप से दिखाती हैं कि दोनों देशों का सहयोग अब केवल कूटनीतिक या आर्थिक नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्रों तक भी विस्तृत हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि भारत मंगोलियाई नागरिकों को मुफ्त ई-वीज़ा प्रदान करेगा और मंगोलिया के युवा सांस्कृतिक दूतों के वार्षिक दौरे का प्रायोजन भी करेगा। प्रधानमंत्री ने इसे सिर्फ कूटनीतिक कदम के रूप में नहीं बल्कि "आत्मिक और आध्यात्मिक" संबंधों के प्रतीक के रूप में बताया। यह ध्यान देने योग्य है कि मंगोलिया में बौद्ध धर्म के विकास में नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मोदी ने नालंदा और गंदन मठ को जोड़ने की पहल का जिक्र करते हुए इस ऐतिहासिक संबंध में नई ऊर्जा लाने की बात कही। हम आपको बता दें कि सिर्फ सांस्कृतिक सहयोग ही नहीं, भारत ने मंगोलिया के विकास में भी एक स्थायी और भरोसेमंद साझेदार के रूप में अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। भारत की 1.7 अरब अमेरिकी डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट से मंगोलिया में तेल रिफाइनरी परियोजना का निर्माण हो रहा है, जो मंगोलिया की ऊर्जा सुरक्षा को नई दिशा देगा। मंगोलियाई राष्ट्रपति ने इस परियोजना में भारत के योगदान के लिए आभार व्यक्त किया और डिजिटल सहयोग पर हस्ताक्षरित समझौते को भी ऐतिहासिक करार दिया। सामरिक दृष्टि से, मंगोलिया के साथ मजबूत संबंध भारत के लिए कई मायनों में महत्वपूर्ण हैं। मंगोलिया, चीन और रूस के बीच स्थित एक भू-राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र है। इस क्षेत्र में स्थिर और विश्वसनीय साझेदार के रूप में भारत की मौजूदगी, चीन और रूस के प्रभाव को संतुलित करने में मदद कर सकती है। इसके अतिरिक्त, मंगोलिया में भारत की ऊर्जा और डिजिटल परियोजनाओं की भागीदारी न केवल आर्थिक लाभ देती है, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग को भी सुदृढ़ बनाती है। भारत और मंगोलिया के बीच सहयोगी खनिज और भूविज्ञान परियोजनाएं, दोनों देशों को प्राकृतिक संसाधनों और ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण लाभ देती हैं।

मंगोलियाई राष्ट्रपति की चार दिवसीय भारत यात्रा का औपचारिक कार्यक्रम भी इस रिश्ते की गंभीरता को दर्शाता है। राष्ट्रपति ने राजघाट पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के साथ मुलाकात एवं भोज का भी उनका कार्यक्रम रहा। उनके साथ उच्चस्तरीय मंत्रियों, सांसदों, वरिष्ठ अधिकारियों, व्यवसायिक नेताओं और सांस्कृतिक प्रतिनिधियों की टीम भी है। यह भारत-मंगोलिया संबंधों में राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विमाओं के समन्वय का प्रतीक है।

देखा जाये तो भारत-मंगोलिया संबंध सिर्फ कूटनीतिक प्रोटोकॉल नहीं हैं; ये एक दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी का संकेत हैं। भारत के लिए मंगोलिया केवल एक पारंपरिक मित्र देश नहीं, बल्कि एक भू-राजनीतिक सहयोगी है, जिसके माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता, ऊर्जा सुरक्षा और डिजिटल साझेदारी को मजबूत किया जा सकता है। साथ ही, यह साझेदारी भारत को उत्तर और मध्य एशियाई भू-राजनीतिक परिदृश्य में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देती है।

इस तरह, मोदी और खुरेलसुख की नई पहलें केवल वर्तमान सहयोग की पुष्टि नहीं करतीं, बल्कि भविष्य की रणनीतिक साझेदारी की नींव भी रखती हैं। मानवतावादी सहायता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, तकनीकी सहयोग और ऊर्जा परियोजनाओं के माध्यम से भारत और मंगोलिया का संबंध अब न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक बल्कि सामरिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक हो गया है। यह यात्रा और समझौते इस ऐतिहासिक बंधन को और अधिक मज़बूत और बहुआयामी बनाते हैं।

बहरहाल, भारत और मंगोलिया का रिश्ता केवल आधिकारिक या औपचारिक नहीं है; यह एक गहरी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामरिक साझेदारी है। ऐसे रिश्ते न केवल क्षेत्रीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि भारत को एशिया में अपनी रणनीतिक और आर्थिक उपस्थिति मजबूत करने में भी सहायक हैं।

अभियान

मां बगलामुखी के तीन दिव्य धाम: दतिया, नलखेड़ा और हिमाचल में शक्तिपीठों की अद्भुत गाथा

भारत की पवित्र भूमि पर देवी-शक्ति की उपासना का एक विशाल और रहस्यमय इतिहास रहा है। यहां की हर नदी, हर पर्वत और हर तीर्थ में एक दिव्य ऊर्जा प्रवाहित होती है, जो मानव जीवन के भय, अंधकार और अन्याय को दूर करने का सामर्थ्य रखती है। दस महाविद्याओं में से एक, देवी बगलामुखी या पीतांबरा देवी, उन्हीं दिव्य शक्तियों में से एक हैं, जिनकी उपासना से साधक को वाणी की सिद्धि, शत्रुनाश, न्याय की विजय और आत्मबल की अद्भुत प्राप्ति होती है। माता बगलामुखी को 'वाक्-सिद्धि' की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है। उनके तीन मुख्य मंदिर भारत में हैं—दतिया का पीतांबरा पीठ, नलखेड़ा का बगलामुखी शक्तिपीठ और हिमाचल प्रदेश का बगलामुखी धाम। इन तीनों मंदिरों की कथा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि गहन रहस्यमयी और तांत्रिक परंपरा से जुड़ी है।

सबसे प्रसिद्ध मंदिर मध्य प्रदेश के दतिया जिले में स्थित है, जिसे पीतांबरा पीठ कहा जाता है। इस मंदिर की स्थापना सन् 1935 में स्वामीजी महाराज ने दतिया नरेश के सहयोग से की थी। कहते हैं, स्वामीजी ने गहन तपस्या और तांत्रिक साधना के बल पर मां बगलामुखी को यहाँ प्रतिष्ठित किया। यह मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं, बल्कि एक सक्रिय शक्तिकेंद्र है जहाँ साधना, जप, और तांत्रिक अनुष्ठान आज भी प्राचीन परंपरा के अनुसार होते हैं। यहाँ देवी का स्वरूप अत्यंत तेजस्वी और पीले आभा से युक्त है। भक्त पीले वस्त्र धारण करते हैं, पीले पुष्प अर्पित करते हैं, और हल्दी से तिलक लगाते हैं — क्योंकि पीला रंग स्वयं देवी की आभा का प्रतीक है। इस पीठ में बगलामुखी माता के साथ धूमावती देवी और खंडेश्वर महादेव की भी प्रतिष्ठा है, जो इसे त्रिगुणमयी शक्ति का केंद्र बनाते हैं। कहा जाता है कि जो व्यक्ति सच्चे मन से मां पीतांबरा का स्मरण करता है, उसके शत्रु निष्क्रिय हो जाते हैं, और जीवन में न्याय और विजय का मार्ग खुल जाता है।

दूसरा प्रमुख धाम है नलखेड़ा, जो मध्य प्रदेश के शाजापुर जिले में लखुंदर नदी के तट पर

स्थित है। यहां तीन मुखों वाली मां बगलामुखी की अत्यंत अद्भुत प्रतिमा विराजमान है। लोककथाओं में कहा जाता है कि यह मंदिर महाभारत युग का है। जब कुरुक्षेत्र युद्ध आरंभ होने वाला था, तब धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण के निर्देश पर यहीं बगलामुखी देवी की साधना की थी, ताकि धर्म की विजय सुनिश्चित हो सके। इस मंदिर में साधक आज भी पीले वस्त्र पहनकर हल्दी, चने और पीले फूलों से देवी का पूजन करते हैं। यहाँ की साधना वाणी और बुद्धि दोनों को स्थिर करती है। तांत्रिक मतानुसार, जो व्यक्ति यहाँ साधना करता है, उसे ऐसी वाक्-सिद्धि प्राप्त होती है कि उसकी कही हुई वाणी सत्य सिद्ध होती है। इसी कारण राजनेता, वकील और न्यायिक क्षेत्र से जुड़े लोग यहां विशेष श्रद्धा के साथ आते हैं।

तीसरा प्रसिद्ध धाम है हिमाचल प्रदेश का बगलामुखी मंदिर, जो हरे-भरे पर्वतों की गोद में स्थित है। इस मंदिर के विषय में एक प्राचीन कथा प्रचलित है कि एक बार जब पृथ्वी पर अन्याय, झूठ और अधर्म का अंधकार फैल गया था, तब भगवान विष्णु ने मां बगलामुखी को आवाहन किया। तब देवी हल्दी के रंग वाले जल से प्रकट हुईं और अपने पीले तेज से समस्त अधर्म का नाश किया। इसी कारण उन्हें 'पीतांबरा' कहा गया। यह मंदिर प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत संगम है। यहाँ आने वाले भक्तों का विश्वास है कि माता के दर्शन मात्र से जीवन के सभी संकट दूर हो जाते हैं, विशेषकर न्यायिक मामलों, वाद-विवाद और शत्रुजनित कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस मंदिर के समीप शिवलिंग भी स्थापित है, जहाँ भक्त जलाभिषेक करते हैं और जीवन में संतुलन और स्थिरता की कामना करते हैं।

इन तीनों धामों की एक समान विशेषता है—यहां सब कुछ पीतवर्ण में निहित है। मां का स्वरूप, पूजा की सामग्री, वस्त्र, यहां तक कि वातावरण तक—सब पीले रंग की आभा से ओत-प्रोत रहता है। यह पीला रंग बुद्धि, स्थिरता, ऊर्जा और दिव्य ज्ञान का प्रतीक है। देवी बगलामुखी का नाम 'बगल' शब्द से आया है, जिसका अर्थ है "जो विरोधी की वाणी और गति को रोक दे।" अतः इनकी कृपा से व्यक्ति के जीवन में सत्य और धर्म की विजय होती है, और असत्य का नाश।

दतिया, नलखेड़ा और हिमाचल — ये तीनों मंदिर केवल पूजन स्थल नहीं, बल्कि साधना के ऐसे केंद्र हैं जहाँ चेतना का कंपन बदल जाता है। जो व्यक्ति एक बार भी इन धामों में पहुंचता है, उसके भीतर की नकारात्मकता स्वतः विलीन हो जाती है। भक्तों का अनुभव है कि मां के चरणों में सिर झुकाते ही मन में अद्भुत शांति, साहस और आत्मविश्वास का संचार होता है। यही कारण है कि इन मंदिरों की यात्रा आज भी साधकों, राजनेताओं, न्यायविदों और आम जन — सभी के लिए आत्मशक्ति का स्रोत मानी जाती है।

मां बगलामुखी का उपदेश यही है — "सत्य पर अडिग रहो, धर्म का साथ दो, भय और अन्याय से मत डरो। जब तुम्हारा मन स्थिर और निर्मल होगा, तब मैं स्वयं तुम्हारे पक्ष में खड़ी रहूंगी।"

और यही आशीर्वाद इन तीनों शक्तिपीठों की पवित्र भूमि पर आज भी गूंजता है — "जय मां पीतांबरा, जय मां बगलामुखी।"

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

GUJARAT URBAN DEVELOPMENT YEAR 2025

विकास सप्ताह

२४ साल जनविश्वास, सेवा और समर्पण के

हर घर स्वदेशी
घर-घर स्वदेशी

विकास सप्ताह ने लिखा विश्वास का अध्याय

₹२८८५ करोड़ से अधिक के विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल

माननीय मुख्यमंत्री
के करकमलों से

"गुजरात का हमेशा संकल्प रहा है,
राज्य के विकास से देश का विकास,
विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात...

- श्री नरेंद्रभाई मोदी, माननीय प्रधानमंत्री"

गरिमामयी उपस्थिति

श्री ऋषिकेश पटेल

माननीय मंत्री, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं
चिकित्सा शिक्षा, उच्च और तकनीकी शिक्षा, कानून,
न्यायपालिका, वैधानिक और संसदीय मामले, गुजरात

शहरी विकास और शहरी आवास विभाग की ₹२०७९ करोड़ से अधिक की कुल २९९ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

गृह विभाग की ₹४२ करोड़ से अधिक की कुल ७ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग की ₹२५२ करोड़ से अधिक की कुल ६४ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

बंदरगाह और परिवहन विभाग की ₹२३ करोड़ से अधिक की कुल ४ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

प्राथमिक शिक्षा विभाग की ₹१३८ करोड़ से अधिक की कुल ८८ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

कृषि, किसान कल्याण और सहकारिता विभाग की ₹४० करोड़ की कुल २ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण

सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग की ₹८३ करोड़ से अधिक की कुल ८ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

१० IAS
कोचिंग सेंटर्स का
शुभारंभ

उद्योग और खनन विभाग की ₹३४ करोड़ की कुल ४ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की ₹८४ करोड़ की कुल ४ विकास परियोजनाओं का शिलान्यास

तकनीकी शिक्षा विभाग की ₹३१ करोड़ की कुल २ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण

श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग की ₹५४ करोड़ से अधिक की कुल ४ विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

यात्राधाम विभाग की ₹२१ करोड़ से अधिक की कुल २ विकास परियोजनाओं का शिलान्यास

कार्यक्रम स्थल के लिए स्कैन करें

१५ अक्टूबर २०२५, बुधवार | सुबह १०:०० बजे | महात्मा मंदिर, गांधीनगर

सीधा प्रसारण: CMOGuj | CMOGuj | CMOGujarat | CMOGujarat

सोनम वांगचुक की रासुका हिरासत में कानूनी सुरक्षा, जोधपुर जेल प्रशासन ने सुनिश्चित किए सभी अधिकार

(जीएनएस)। जोधपुर। लद्दाख के जलवायु कार्यकर्ता और सामाजिक सक्रियक सोनम वांगचुक को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (रासुका) के तहत हिरासत में लेने के बाद जोधपुर केंद्रीय कारागार में रखा गया है। जेल प्रशासन ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल हलफनामे में स्पष्ट किया है कि वांगचुक को एकांत कारावास में नहीं रखा गया है और उन्हें सभी कानूनी अधिकार उपलब्ध कराए गए हैं। जेल अधीक्षक ने कहा कि वांगचुक को मुलाकातियों से मिलने और कैदियों के मिलने वाले सभी अधिकार प्राप्त हैं, साथ ही उन्हें पूरी चिकित्सकीय और शारीरिक सुविधा दी जा रही है।

हलफनामे में बताया गया कि वांगचुक जनरल वार्ड में 20 गुणा 20 फुट के मानक बैरक में हैं और फिलहाल वह इस बैरक में अकेले रह रहे हैं। जेल प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया है कि उनके मुलाकातियों के साथ बातचीत के दौरान स्थानीय पुलिसकर्मियों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए, जैसा कि राजस्थान कारागार नियमावली, 2022 के नियम 538 के तहत अनिवार्य है। प्रशासन ने सुप्रीम कोर्ट को यह भी जानकारी दी कि वांगचुक किसी भी पुरानी बीमारी से पीड़ित नहीं हैं और उन्हें रोज़ाना सामान्य आहार दिया जा रहा है।

सोनम वांगचुक को 26 सितंबर को हिरासत में लिया गया था। यह गिरफ्तारी लद्दाख को राज्य का दर्जा देने और उसे छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर हुए हिंसक विरोध प्रदर्शनों के दो दिन बाद हुई। इस प्रदर्शन में चार लोगों की मौत हुई और 90 लोग घायल हुए। सरकार ने वांगचुक पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाया था।

जेल प्रशासन ने सुप्रीम कोर्ट को यह भी बताया कि वांगचुक को अपने मुलाकातियों तक पहुंच के हर अधिकार उपलब्ध कराए गए हैं और उनके मुलाकाती अधिकारों का किसी भी तरह से उल्लंघन नहीं हो रहा है। हलफनामा उनकी पत्नी गीतांजलि अंगमो की ओर से दायर याचिका के जवाब में दाखिल किया गया था, जिसमें वांगचुक की हिरासत को चुनौती दी गई थी और उनकी तत्काल रिहाई की मांग की गई थी।

प्रशासन ने कोर्ट को आश्वस्त किया कि वांगचुक की सुरक्षा और सुविधा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं। जेल में उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा की पूरी निगरानी की जा रही है और उनके साथ किसी भी तरह के अनुचित व्यवहार की अनुमति नहीं दी जा रही है। इस हलफनामे से स्पष्ट है कि जेल प्रशासन वांगचुक को कानूनन मिलने वाले सभी अधिकार प्रदान करने में पूरी तरह प्रतिबद्ध है और उनकी हिरासत को नियमों और न्यायिक प्रावधानों के अनुरूप रखा जा रहा है।

'खुदा की कसम...': AIMIM ने बिहार विधानसभा चुनाव में लागू किया अनोखा शपथ पत्र, बगावत रोकने की तैयारी

(जीएनएस)। पटना। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में अपनी उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारते हुए एआईएमआईएम (AIMIM) ने एक अनोखी पहल की है। पार्टी ने अपने सभी प्रत्याशियों के लिए एक ऐसा शपथ पत्र तैयार किया है, जिसमें उम्मीदवार खुदा या ईश्वर को साक्षी मानकर पार्टी के प्रति वफादारी की कसम खाएंगे। इस कदम को पिछले विधानसभा चुनावों में विधायकों के दल-बदल से सबक लेकर उठाया गया है। पार्टी ने इस शपथ पत्र में स्पष्ट किया है कि उम्मीदवार यह शपथ दो गवाहों के सामने खुदा या ईश्वर को साक्षी मानकर लेंगे। इसमें प्रत्याशी यह मानते हैं कि वे एआईएमआईएम के सदस्य हैं, पार्टी के प्रत्याशी बनने के अधिकार के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है और यदि पार्टी उन्हें चुनाव लड़ने का मौका देती है, तो वे पूरी वफादारी के साथ चुनाव लड़ेंगे और पार्टी में हमेशा बने रहेंगे। यदि उन्हें टिकट नहीं मिलता है, तब भी वे पार्टी के निर्णय का सम्मान करेंगे और अधिकृत उम्मीदवार का पूर्ण समर्थन करेंगे। इस शपथ पत्र को लेकर प्रदेश की राजनीति में माना जा रहा है कि यह कदम बगावत या टूट को रोकने के लिए उठाया गया है। पिछले विधानसभा चुनावों में पार्टी को पांच सीटों पर जीत मिली थी, लेकिन उनमें से चार विधायकों ने बाद में पार्टी छोड़कर राजद का दामन थाम लिया था। इस घटना ने ओवैसी की पार्टी के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी का संकेत दिया

और इस बार उन्होंने ऐसे कदम उठाने का निर्णय लिया। एआईएमआईएम के प्रदेश अध्यक्ष और विधायक अख्तरुल ईमान ने कहा कि ईश्वर या अल्लाह के नाम से शपथ लेना सच्चाई का प्रतीक है और संविधान में इसकी विधिक मान्यता है। उन्होंने बताया कि सरकारी संस्थाओं में जिम्मेदारी मिलने पर भी सदस्यों को शपथ दिलाई जाती है। उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि हमारे उम्मीदवार पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ चुनाव लड़ें। जब वे पार्टी के दफ्तर में आवेदन करते समय यह शपथ लेंगे, तो विधानसभा में शपथ लेने में आसानी होगी। यह हलफ गैर कानूनी नहीं है बल्कि सत्य और निष्ठा का प्रतीक है।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025: BJP ने पहली लिस्ट जारी, 50% से ज्यादा टिकट दलित, पिछड़ा और महिलाओं को

(जीएनएस)। पटना। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिए भारतीय जनता पार्टी (BJP) ने मंगलवार को अपनी पहली उम्मीदवार सूची जारी कर दी है। इस लिस्ट में कुल 71 उम्मीदवारों के नाम शामिल हैं। इस बार पार्टी ने सामाजिक संतुलन और जातीय प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखते हुए दलित, पिछड़ा, अति पिछड़ा और महिलाओं को प्राथमिकता दी है। सूची में 9 महिला उम्मीदवार शामिल हैं, जबकि ओबीसी 17 और अति पिछड़ा वर्ग के 11 उम्मीदवारों को टिकट मिला है। इसके अलावा एससी-एसटी वर्ग के 6 उम्मीदवार मैदान में हैं। कुल मिलाकर, दलित, पिछड़ा, अति पिछड़ा और महिला उम्मीदवारों को 50 प्रतिशत से अधिक टिकट दिए गए हैं।

भाजपा ने सामाजिक संतुलन के साथ जातीय समीकरण को भी ध्यान में रखा है। इस बार भूमिहार समुदाय से 11, ब्राह्मण से 7, राजपूत से 15 उम्मीदवार मैदान में उतारे गए हैं। इसके अलावा कायस्थ और मारवाड़ी समुदायों के प्रतिनिधियों को भी चुनावी मुकाबले में मौका दिया गया है। नई सीटों और नए चेहरों को कुम्हरार, पटना साहिब, राजनगर और औरंगाबाद जैसी महत्वपूर्ण सीटों पर उतारा गया है।

महिला उम्मीदवारों की बात करें तो बेतिया से पूर्व उप मुख्यमंत्री रेणु देवी, परिहार से गायत्री देवी, नरपतगंज से देवंती देवी, किशनगंज से स्वीटी सिंह और प्राणपुर से निशा सिंह को चुनावी मैदान में उतारा गया है। इसके अलावा कोढ़ा सीट से कविता सिंह, औराई से रमा निषाद और वारसलीगंज से अरुणा देवी

को टिकट मिला है। जमुई से श्रेयसी सिंह को फिर से मौका दिया गया है।

भाजपा ने लोकसभा चुनाव हार चुके पूर्व केंद्रीय मंत्री रामकृपाल यादव को दानापुर से और मिथिलेश तिवारी को बैकुंठपुर से उम्मीदवार बनाया है। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी को तारापुर से और विजय सिन्हा को लखीसराय से मैदान में उतारा गया है। हालांकि, विधानसभा अध्यक्ष और पटना साहिब के विधायक नंदकिशोर यादव और कुम्हरार से अरुण कुमार सिन्हा का टिकट इस बार नहीं मिला। भाजपा इस बार एनडीए के साथ मिलकर कुल 101 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। पहली लिस्ट में 71 उम्मीदवारों के नाम सामने आए हैं, जबकि बाकी 30 उम्मीदवारों के नाम बाद में घोषित किए जाएंगे। बिहार में विधानसभा चुनाव दो चरणों में होंगे; पहले चरण का मतदान 6 नवंबर और दूसरे चरण का 11 नवंबर को होगा, जबकि मतगणना 14 नवंबर को होगी।

इसी बीच, हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) ने भी अपनी उम्मीदवार सूची जारी की है। इस लिस्ट के अनुसार, पार्टी के प्रमुख जीतन राम मांझी की बहू दीपा मांझी इमामगंज सीट से चुनाव लड़ेंगी। मांझी ने अपनी समधन ज्योति देवी को बाराचट्टी से टिकट दिया है। इसके अलावा टिकारी से अनिल कुमार, अतरी से रोमित कुमार, सिंकदरा से प्रफुल्ल मांझी और कुटुम्बा से ललन राम चुनावी मैदान में होंगे। खास बात यह है कि हम ने दलित और महादलितों के हितों के साथ-साथ भूमिहार जाति के नेताओं को भी टिकट दिया है। अतरी से रोमित कुमार और टिकारी से अनिल कुमार को पार्टी ने मौका दिया है, जबकि अनिल कुमार वर्तमान में टिकारी से मौजूदा विधायक भी हैं।

इस प्रकार, दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिए उम्मीदवारों के चयन में सामाजिक और जातीय समीकरण का खास ध्यान रखा है। बीजेपी की पहली लिस्ट में महिलाओं और पिछड़े वर्ग को अधिक प्रतिनिधित्व देने की रणनीति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, वहीं हम ने भी अपने क्षेत्रीय समीकरण और जातीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए उम्मीदवारों का चयन किया है।

सोना वायदा में 1251 रुपये और चांदी वायदा में 4127 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 121 रुपये फिसला

कमोडिटी वायदाओं में 107806.24 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 264907.84 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 98235.87 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार: बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 29762 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 372724.62 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 107806.24 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 264907.84 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अक्टूबर वायदा 29762 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 4876.29 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 98235.87 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना दिसंबर वायदा 126041 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 126930 रुपये के ऑल टाइम हाई और नीचे में 124243 रुपये पर पहुंचकर, 124629 रुपये के पिछले बंद के सामने 1251 रुपये या 1 फीसदी बढ़कर 125880 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-गिनी अक्टूबर वायदा 1488 रुपये या 1.49 फीसदी की बढ़त के साथ 101404 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-पेटल अक्टूबर वायदा 176 रुपये या 1.41 फीसदी की बढ़त के साथ 12675 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोना-मिनी नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 124348 रुपये के भाव पर खूलकर, 126472 रुपये के दिन के उच्च और 123673 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1468 रुपये या 1.18 फीसदी की बढ़त के साथ 125432 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-टेन अक्टूबर वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 125906 रुपये के भाव पर खूलकर, 127149 रुपये के ऑल टाइम हाई और 124222 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 124373 रुपये के पिछले बंद के सामने 1577 रुपये या 1.27 फीसदी की बढ़त के साथ 125950 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी दिसंबर वायदा 155253 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 162700 रुपये के ऑल टाइम हाई और नीचे में 154111 रुपये पर पहुंचकर, 154645 रुपये के पिछले बंद के सामने 4127 रुपये या 2.67 फीसदी बढ़कर 158772 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी नवंबर वायदा 5171 रुपये या 3.32 फीसदी की बढ़त के साथ 160802 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो नवंबर वायदा 5226 रुपये या 3.36 फीसदी की तेजी के संग 160870 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

मेटल वर्ग में 5694.25 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अक्टूबर वायदा 13.65 रुपये या 1.36 फीसदी गिरकर 989.85 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता अक्टूबर वायदा 1.8 रुपये या 0.61 फीसदी औंधकर 292.45 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम अक्टूबर वायदा 1.55 रुपये या 0.59 फीसदी औंधकर 262.6 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा अक्टूबर वायदा 70 पैसे या 0.39 फीसदी की नरमी के साथ 180.65 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 3749.00 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अक्टूबर वायदा सत्र के आरंभ में 5303 रुपये के भाव पर खूलकर, 5310 रुपये के दिन के उच्च और 5130 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 121 रुपये या 2.28 फीसदी गिरकर 5182 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अक्टूबर वायदा 121 रुपये या 2.28 फीसदी की गिरावट के साथ 5183 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा नैचुरल गैस अक्टूबर वायदा 276.1 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 276.9 रुपये और नीचे में 270.6 रुपये पर पहुंचकर, 276.5 रुपये के पिछले बंद के सामने 5.5 रुपये या 1.99 फीसदी गिरकर 271 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अक्टूबर वायदा 5.2 रुपये या 1.88 फीसदी की गिरावट के साथ 271.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अक्टूबर वायदा सत्र के आरंभ में 945.8 रुपये के भाव पर खूलकर, 20 पैसे या 0.02 फीसदी के सुधार के साथ 934 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 42368.43 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 55867.45 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 4600.16 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 221.18 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 24.09 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 848.18 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 1342.53 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2391.21 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 2.72 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 17713 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 63857 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 24312 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 331554 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 27296 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 32813 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 65013 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 187833 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 24000 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 49297 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अक्टूबर वायदा 29890 पॉइंट पर खूलकर, 30298 के उच्च और 29669 के नीचले स्तर को छूकर, 334 पॉइंट बढ़कर 29762 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अक्टूबर 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 65.2 रुपये की गिरावट के साथ 82.1 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अक्टूबर 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.3 रुपये की गिरावट के साथ 8.25 रुपये हुआ। सोना अक्टूबर 128000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 621 रुपये की बढ़त के साथ 2056.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अक्टूबर 164000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 3704 रुपये की बढ़त के साथ 4750 रुपये हुआ। तांबा अक्टूबर 1000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.49 रुपये की गिरावट के साथ 19.55 रुपये हुआ। जस्ता अक्टूबर 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 64 पैसे की नरमी के साथ 2.4 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अक्टूबर 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 54.7 रुपये की बढ़त के साथ 97.8 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अक्टूबर 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.45 रुपये की बढ़त के साथ 11.3 रुपये हुआ। सोना अक्टूबर 115000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 59.5 रुपये की बढ़त के साथ 354 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अक्टूबर 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 245 रुपये की गिरावट के साथ 3160 रुपये हुआ। तांबा अक्टूबर 980 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 10.53 रुपये की बढ़त के साथ 20.4 रुपये हुआ। जस्ता अक्टूबर 290 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 99 पैसे के सुधार के साथ 3.3 रुपये हुआ।

अयोध्या में अंतरराष्ट्रीय रामलीला का भव्य आयोजन, रूस, थाईलैंड, इंडोनेशिया, नेपाल और श्रीलंका के कलाकारों ने दी रामकथा की अनूठी प्रस्तुति

(जीएनएस)। अयोध्या। इस वर्ष दीपोत्सव के नौवें संस्करण के अवसर पर अयोध्या अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक मंच के रूप में उभर रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशानुसार अयोध्या में इस बार एक अभूतपूर्व अंतरराष्ट्रीय रामलीला का आयोजन किया गया है, जिसमें रूस, थाईलैंड, इंडोनेशिया, नेपाल और श्रीलंका के कलाकार भाग ले रहे हैं। कुल 90 विदेशी कलाकार अयोध्या की पावन भूमि पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की लीला का मंचन कर रहे हैं। यह आयोजन अयोध्या को धार्मिक केंद्र के साथ-साथ सांस्कृतिक और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन का केंद्र भी बनाएगा। राम कथा पार्क में आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय रामलीला में विभिन्न देशों के कलाकार अपनी पारंपरिक कला और रंगमंचीय तकनीक के माध्यम से रामकथा के विभिन्न प्रसंगों का मंचन कर रहे हैं। रूस से आए 15 कलाकार स्वयंवर का दृश्य प्रस्तुत करेंगे, जिसमें भारतीय कथा और रूसी रंगमंचीय तकनीक का अनूठा मिश्रण देखने को मिलेगा। यह प्रस्तुति दर्शकों को राम और सीता के दिव्य मिलन की अद्वितीय अनुभूति कराएगी।

थाईलैंड के 10 कलाकार राम-लखन संघर्ष, शूर्पणखा के दृश्य, मारीच से युद्ध और राम-रावण युद्ध का मंचन कर रहे हैं। उनके पारंपरिक नृत्य-नाट्य शैली में प्रस्तुत यह युद्ध दृश्य धर्म और अधर्म के बीच की लड़ाई को जीवंत रूप में दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है। इंडोनेशिया के 10 कलाकार लंका दहन और अयोध्या वापसी के दृश्य का मंचन कर रहे हैं, जो राम के जीवन के महत्वपूर्ण घटनाक्रम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दर्शकों तक पहुंचा रहे हैं।

नेपाल से आए 33 कलाकार इस बार रामलीला में लक्ष्मण पर शक्ति प्रदर्शन भी प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे पहले नेपाल की रामलीला मुख्य रूप से मां सीता पर केंद्रित होती थी। इस नए दृष्टिकोण से अयोध्या की रामलीला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक प्रतिष्ठित बन रही है।

श्रीलंका से आए 22 कलाकारों में से दो कलाकार पहले ही अयोध्या पहुंच चुके हैं और वे रावणेश्वरा का दृश्य प्रस्तुत करेंगे। श्रीलंका वासी आज भी रावण को ईश्वर की भूमिका में मानते हैं और इस भाव को मंच पर जीवंत रूप से दिखाया जाएगा।

इस अंतरराष्ट्रीय रामलीला आयोजन के माध्यम से अयोध्या न केवल धार्मिक उत्सवों का केंद्र बन रहा है, बल्कि यह सांस्कृतिक पर्यटन और वैश्विक कला के आदान-प्रदान का भी प्रमुख स्थल बनकर उभर रहा है। दर्शकों को इस बार रामकथा की अद्वितीय और बहुरंगी प्रस्तुति देखने को मिलेगी, जिसमें प्रत्येक देश की सांस्कृतिक पहचान के साथ रामकथा का सार भी जीवंत रूप में पेश किया जा रहा है।

पश्चिम रेलवे चलायेगी साबरमती-गोरखपुर और साबरमती-बेगूसराय के बीच अनारक्षित फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनें

पश्चिम रेलवे द्वारा आगामी दिवाली और छठ पूजा त्योहारों के मद्देनजर यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए साबरमती-गोरखपुर और साबरमती-बेगूसराय के बीच अनारक्षित स्पेशल ट्रेनें विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। इन स्पेशल ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

ट्रेन संख्या 09429/09430 साबरमती-गोरखपुर त्रि-साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल ट्रेन विशेष किराए पर (12 फेरे)

ट्रेन संख्या 09429 साबरमती-गोरखपुर त्रि-साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल साबरमती से 16 अक्टूबर 2025 से 26 अक्टूबर 2025 तक प्रति गुरुवार, शुक्रवार और रविवार को सुबह 08:50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन सुबह 10:00 बजे गोरखपुर पहुचेंगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09430 गोरखपुर-साबरमती त्रि-साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल गोरखपुर से 17 अक्टूबर 2025 से 27 अक्टूबर 2025 तक प्रति शुक्रवार, शनिवार और सोमवार को दोपहर 13:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन दोपहर 15:30 बजे साबरमती पहुचेंगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबूरोड, मारवाड़ जं., अजमेर, जयपुर, गांधी नगर जयपुर, दौसा, बाँदीकुई जं., भरतपुर, ईदगाह आगरा, टुंडला, इटावा, गोविंदपुरी,उन्नाव, लखनऊ, बाराबंकी, गोंडा, मनकापुर एवं बस्ती स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में सभी अनारक्षित श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 09431/09432 साबरमती-बेगूसराय अनारक्षित स्पेशल ट्रेन विशेष किराए पर (28 फेरे)

ट्रेन संख्या 09431 साबरमती-बेगूसराय अनारक्षित स्पेशल साबरमती से 14 अक्टूबर 2025 से 27 अक्टूबर 2025 तक प्रतिदिन दोपहर 12:05 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन सुबह 08:00 बजे बेगूसराय

प्रतापनगर से कटिहार एवं जयनगर के लिए अनारक्षित फेस्टिवल स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा दिवाली एवं छठ पूजा के त्योहारी सीज़न के दौरान उनकी यात्रा माँग को पूरा करने के उद्देश्य से प्रतापनगर-कटिहार एवं प्रतापनगर-जयनगर स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर अनारक्षित फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनें चलाईगी।

1.ट्रेन संख्या 09123/09124 प्रतापनगर-कटिहार (साप्ताहिक) अनारक्षित स्पेशल [04 फेरे]

ट्रेन संख्या 09123 प्रतापनगर-कटिहार साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल बुधवार, 15 और 22 अक्टूबर, 2025 को 16:30 बजे प्रतापनगर से प्रस्थान करेगी और शुक्रवार को 07:15 बजे कटिहार पहुंचेगी। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09124 कटिहार - प्रतापनगर साप्ताहिक अनारक्षित स्पेशल शुक्रवार, 17 और 24 अक्टूबर, 2025 को 11:15 बजे कटिहार से प्रस्थान करेगी और रविवार को 02:30 बजे प्रतापनगर पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में वडोदरा, छायापुरी, गोधरा, दाहोद, रतलाम, नागदा, उज्जैन, संत हिरदाराम नगर, बीना, कटनी मुरवारा, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छिवकी, मिर्ज़ापुर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, बक्सर, आरा, दानापुर, पाटलिपुत्र, सोनपुर, हाजीपुर, बरौनी और खगड़िया स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

2.ट्रेन संख्या 09151/09152 प्रतापनगर-जयनगर अनारक्षित स्पेशल (साप्ताहिक) [04 फेरे]

ट्रेन संख्या 09151 प्रतापनगर - जयनगर स्पेशल रविवार, 19 और 26 अक्टूबर 2025 को 16:35 बजे प्रतापनगर से प्रस्थान करेगी और मंगलवार को 10:00 बजे जयनगर पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09152 जयनगर - प्रतापनगर स्पेशल मंगलवार, 21 और 28 अक्टूबर, 2025 को 14:00 बजे जयनगर से प्रस्थान करेगी और गुरुवार को 05:30 बजे प्रतापनगर पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में वडोदरा, छायापुरी, गोधरा, दाहोद, रतलाम, नागदा, उज्जैन, संत हिरदाराम नगर, बीना, कटनी मुरवारा, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छेवकी, मिर्ज़ापुर, पं. दीन दयाल उपाध्याय, बक्सर, आरा, दानापुर, पाटलिपुत्र, सोनपुर, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, दरभंगा और मधुबनी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे ने अहमदाबाद मंडल के दो कर्मचारियों को संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया

(जीएनएस)। रेलवे संचालन में संरक्षा सर्वोपरि होती है और इसे सुनिश्चित करने में प्रत्येक कर्मचारी की सजगता एवं तत्परता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने अहमदाबाद मंडल के दो कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य एवं संरक्षा के प्रति समर्पण के लिए संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया। ये पुरस्कार अक्टूबर 2025 के दौरान ड्यूटी के समय सतर्कता दिखाने एवं संभावित दुर्घटनाओं को समय रहते टालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रदान किए गए।

दिनांक 20 सितंबर 2025 को स्टेशन मास्टर श्री अजय कुमार जैसवाल साबरमती स्टेशन पर 22:00 से 06:00 बजे की पारी में ड्यूटी पर कार्यरत थे। जब ट्रेन डाउन दिशा में 04:50 बजे स्टेशन से होकर गुजर रही थी। ऑल

राइट एक्सचेंज के दौरान श्री जैसवाल ने गाड़ी के रियर लोको संख्या 70572 में आग की लपटें देखीं। उन्होंने तत्काल अपनी सजगता का परिचय देते हुए लोको पायलट को खतरे का लाल संकेत दिखाया, जिसके परिणामस्वरूप लोको पायलट ने डाउन स्टार्टर 5-39 से पहले ही ट्रेन को रोक लिया। निरीक्षण करने पर पाया गया कि ब्रेक ब्लॉक जाम हो गया था जिससे अधिक गर्मी के कारण आग लग गई थी। लोको पायलट द्वारा ब्रेक ब्लॉक को रिलीज कर स्थिति को नियंत्रित किया गया तथा 05:15 बजे लोको को फिट घोषित किया गया। श्री जैसवाल की समय पर की गई कार्रवाई और सतर्कता से एक संभावित दुर्घटना को टाला जा सका और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित हुई।

इसी प्रकार, श्री अरविंद पटेल, जो एक पूर्व सैनिक हैं, पालनपुर खंड में समपार फाटक संख्या 31, 35 और 36 पर आरजी गेटमैन के रूप में कार्यरत हैं। दिनांक 02 सितंबर 2025 को वे समपार फाटक संख्या 35 'C' पर ड्यूटी कर रहे थे। उसी समय पालनपुर–भीलड़ी खंड में अप लाइन पर मालगाड़ी 16:22 बजे फाटक से पास हुई। गाड़ी के दो भारी ट्रेन पार्ट्स टूटकर लटकते हुए आए और समपार फाटक के चेक रेल में लगे लकड़ी के गुटके से टकराकर फाटक पर गिर गए। श्री पटेल ने तुरंत सतर्कता दिखाते हुए वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (रेलपथ) प्रभारी श्री शिवराज सिंह को सूचना दी। तत्पश्चात उन्होंने यह जानकारी कंट्रोल, टीआई–PNU एवं BLDI, DEN (N) ADI तथा ADEN–PNU को दी। चंडीसर स्टेशन पर ट्रेन को रुकवाकर C&W विभाग द्वारा निरीक्षण कराया गया, जिसमें दोषयुक्त डब्बे को आइसोलेट कर गाड़ी को सुरक्षित रूप से आगे बढ़ाया गया। श्री अरविंद पटेल की त्वरित सूचना एवं सतर्कता के कारण संभावित दुर्घटना को समय रहते रोका जा सका।

पश्चिम रेलवे को अपने ऐसे कर्तव्यनिष्ठ एवं सजग कर्मचारियों पर गर्व है, जो अपने समर्पण, अनुशासन और त्वरित निर्णय क्षमता से रेलवे की संरक्षा संस्कृति को सुदृढ़ बनाते हैं।